ikB

6 चींटी और मक्खी

चींटी से मक्खी यूँ बोली,
सुन री, मेरी बहना भोली।
तू दिन भर पचती मरती,
तभी पेट अपना तू भरती।
तुझे कभी आराम नहीं है,
देख! मुझे कुछ काम नहीं है।

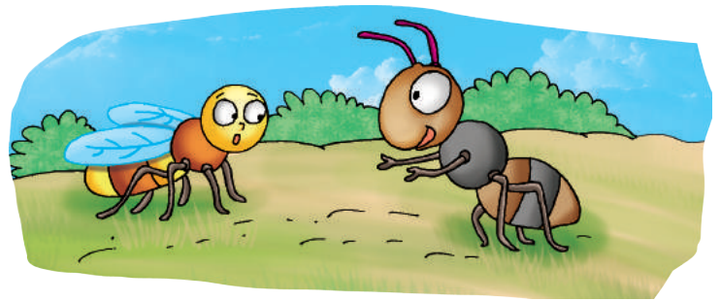

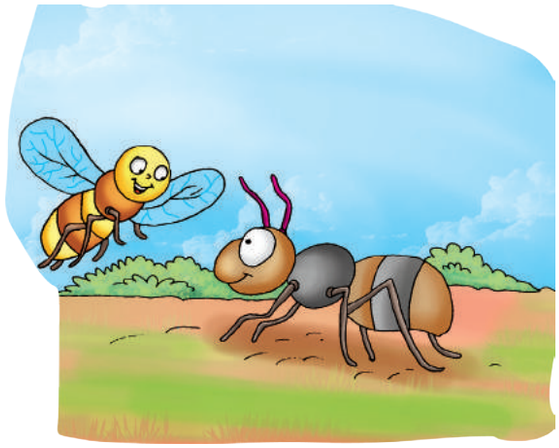

चींटी बोली, न री न, न,
मुझे न ऐसा काम सिखाना।
बिन मेहनत की दूध मलाई,
गिरकर खाई, तो क्या खाई।
मेहनत का हो सूखा दाना,
थोड़ा हो, पर सुख से खाना।

जहाँ करे मन, मैं उड़ जाऊँ,
जो जी में आए, सो खाऊँ।
तू दाना–दाना लेकर जाती,
मैं भिन–भिन, भिन–भिन गीत सुनाती।
ओ बहना, हम तुम मिल जाएँ,
दिन भर खाएँ, दिन भर गाएँ।

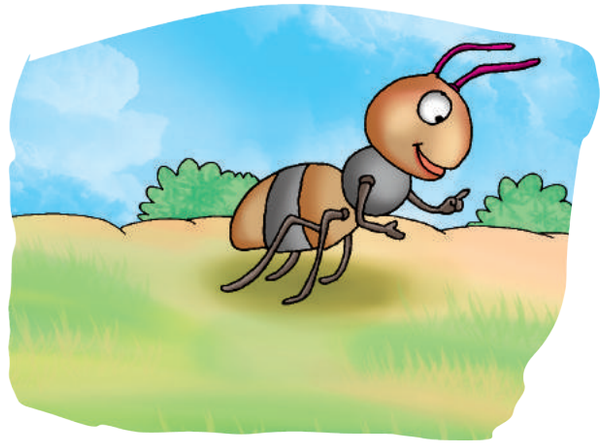

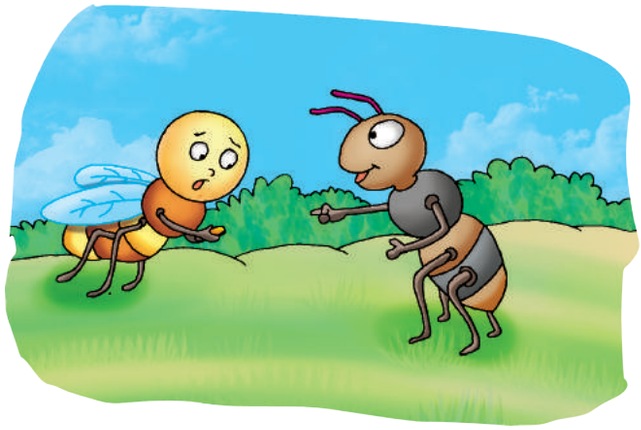

मैं मेहनत करके खाती हूँ,
तभी सदा आदर पाती हूँ।
तुझको जो देखे झल्लाए,
कहीं नहीं तू आदर पाए।
जो मेहनत से कतराते हैं,
वे जीवन भर पछताते हैं।

यह कहकर चींटी मुस्काई,
मक्खी घबराई, शरमाई।
अब भी बात याद जब आए,
मक्खी हाथ मले पछताए।

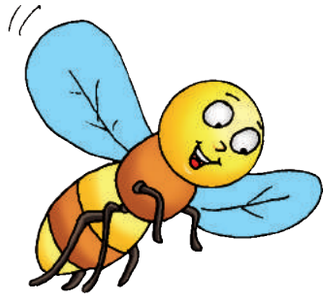

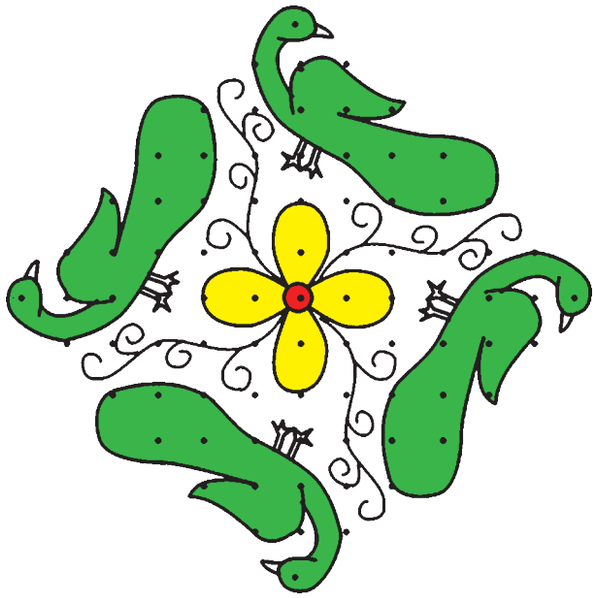

अभ्यास

1- vkb,] 'kCnk d vFk tku&

- पचती मरती – मेहनत करते रहना
- झल्लाना – खीझना
- कतराना – बचना

2- dfork l &

(क) चींटी अपना पेट कैसे भरती है ?

(ख) मक्खी दिन भर क्या काम करती है ?

(ग) चींटी को आदर क्यों मिलता है ?

(घ) जीवन भर किसको पछताना पड़ता है और क्यों ?

(ङ) चींटी ने मक्खी की सलाह को क्यों नहीं माना ?

(च) मक्खी को किस बात पर पछतावा है ?

3- vkidh ckr &

(क) आप कब–कब व किन पर झल्लाते हैं ?

(ख) अपना कोई एक अनुभव बताइए, जब आपने खूब मेहनत की हो और उस काम के लिए आपकी प्रशंसा हुई हो।

(ग) 'चींटी बोली, न री न, न।'

चींटी ने मक्खी की बात को इस तरह से स्वीकार नहीं किया। आप जब किसी बात को स्वीकार नहीं करते हैं तो किस तरह से बोलते हैं?

(घ) जहाँ करे मन, मैं उड़ जाऊँ,
जो जी में आए, सो खाऊँ।

1. आपका मन कहाँ–कहाँ उड़ना चाहता है?
2. वहाँ क्या–क्या देखना चाहते हैं?
3. आप वहाँ क्या–क्या खाना चाहते हैं?

4- Hkk"kk dh ckr&

c vkj Hk dk vUrj&

चींटी से मक्खी यूँ बोली, सुन री, मेरी बहना भोली। इन पंक्तियों में 'बोली' शब्द का अर्थ बोलना तथा भोली का अर्थ सीधापन है। 'ब' और 'भ' के कारण दोनों में काफी अंतर है। नीचे ऐसे ही मिलते–जुलते शब्द दिए गए हैं। इन्हें वाक्य प्रयोग कर लिखें–

1. बालू _____
   भालू _____
2. बला _____
   भला _____
3. बात _____
   भात _____
4. बोली _____
   भोली _____
5. बाड़ _____
   भाड़ _____

phVh vkj gkFkh ¼dqN vkj i<+½

(क) तीन चींटियाँ रास्ते में बैठकर बातें कर रही थीं।

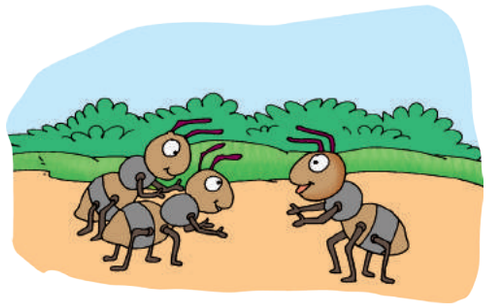

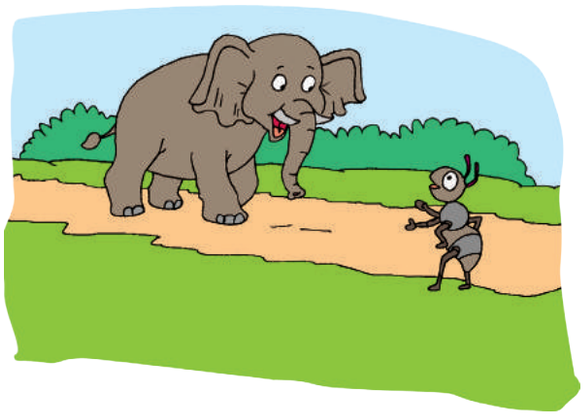

अचानक उस रास्ते से एक हाथी गुजरा।
एक चींटी हाथी से बोली–
ए हाथी, मुझसे कुश्ती करोगे ?

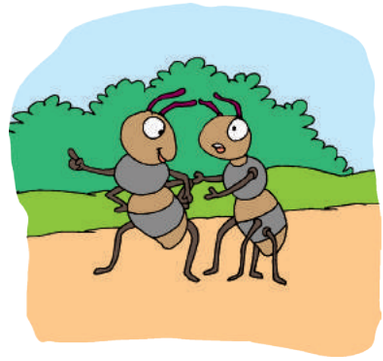

बाकी चीटियाँ बोली–अरी रहने दे,
यह बेचारा अकेला है।

(ख) एक चींटी हाथी पर बैठकर कहीं जा रही थी। रास्ते में एक कच्चा पुल आ गया। चींटी हाथी से बोली– भाई साहब, पार कर लोगे या मैं उतर जाऊँ।